रहेगी, वहीं सामूहिक रूप से संचालन करने पर अतिरिक्त खाद का व्यावसायिक आधार पर निपटान सुनिश्चित होगा। एक बार यह प्रायोगिक परियोजना सफल हो गई, तब गांव स्तर पर सहकारिता नेटवर्क के माध्यम से इसे कम समय में देश भर में दोहराया जा सकता है।

SPICE : एनडीडीबी की एक अन्य प्रमुख पहल Solar Pump Irrigators Cooperative Enterprise अर्थात् SPICE की स्थापना है जिसके माध्यम से सौर ऊर्जा पम्प के मालिक उत्पन्न अतिरिक्त ऊर्जा को बेच सकेंगे। एक ओर इससे ऊर्जा कंपनियों का सब्सिडी का भार कम होगा, अक्षय ऊर्जा प्रमाणपत्र प्राप्त होगा तथा ट्रांसमिशन एवं वितरण हानि में कमी आएगी, वहीं हमारे उन किसानों को इससे अधिक लाभ होगा, जिन्हें आय का अतिरिक्त स्रोत मिलेगा। किसानों को अतिरिक्त बिजली बेचने का विकल्प देकर प्रोत्साहित करने से वे पानी का अनुकूल उपयोग करेंगे जिसकी डेरी उद्योग की वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका है। गुजरात तथा पंजाब में तीन ऐसे प्रयोग पहले से ही चल रहे हैं। राजस्थान में इसको आगे बढ़ाने का कार्य जारी है

साइलेज उत्पादन : गांव स्तरीय डेरी सहकारी समितियों द्वारा साइलेज उत्पादन तथा व्यावसायिक आधार पर इसका विपणन करना एक और पहल है जिस पर सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा चुका है तथा इसे देश के अन्य भागों में दोहराया जा सकता है। हमारे डेरी पशुओं के लिए वर्षभर, विशेषकर कमी के सीजन में गुणवत्ता पोषक तत्वों तथा मोटे चारे की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए हरे चारे को साइलेज के रूप में स्टोर करना एक सबसे अच्छा विकल्प है। हरे चारे तथा फसल अवशेषों के भंडारण के लिए साइलेज टेक्नोलॉजी की भारत में बहुत संभावनाएं हैं क्योंकि एक बार तैयार हो जाने पर इसके भंडारण के लिए कोल्ड चेन तथा चालू खर्च की आवश्यकता नहीं होती है। यदि इसे कम लागत पर चॉपर, मॉवर, बैगर बेलर तथा रैपर का प्रयोग करके लगभग 50 किलो के बैग में पैक किया जाए तो इसे गांव अथवा मिल्कशेड में आसानी से बेचा जा सकता है।

चारा उत्पादन के लिए गौचर भूमि : इसी प्रकार चारा उत्पादन के लिए डीसीएस द्वारा गौचर भूमि का प्रयोग और इसे सदस्यों को बेचना तथा कमाई को पंचायत के साथ बांटना, इसका भी सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया है तथा इसे भी व्यापक रूप से दोहराने की आवश्यकता है।

एथनो वेटनरी मेडिसिन : एथनो वेटनरी मेडिसिन की तकनीक को लोकप्रिय बनाने से दूध उत्पादकों को पशु चिकित्सा लागत में काफी बचत हो सकती है, जो किसानों के लिए आय का एक अप्रत्यक्ष स्रोत बन सकता है। अपनी व्यापक पहुंच तथा किसानों से जुड़ाव के कारण डेरी सहकारिताएं ग्रामीण इलाकों में न केवल इन गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए एक सक्षम माध्यम हो सकती हैं, बल्कि ये इन पहलों को व्यापक स्तर पर आगे बढ़ाने के लिए उनके पास बुनियादी ढांचा भी उपलब्ध करा सकती हैं।

ग्रामीण उद्यमिता के माध्यम से आर्थिक सशक्तिकरण पर संगोष्ठी

22 जून 2018 को, एनडीडीबी ने जयपुर में ग्रामीण उद्यमिता के माध्यम से आर्थिक सशक्तिकरण विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस समारोह में 1000 से अधिक किसानों ने भाग लिया। उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि एनडीडीबी उनके बेहतर भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। श्री दिलीप रथ, अध्यक्ष, एनडीडीबी; श्री खेमराज चौधरी, अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, मत्स्यपालन और गौपालन, राजस्थान सरकार; श्री रुपेंग पाटीदार, अध्यक्ष, राजस्थान सहकारी डेरी महासंघ लि.; श्री जाकिर हुसैन, प्रबंध निदेशक, राजस्थान सहकारी डेरी महासंघ लि.; श्री संग्राम चौधरी, कार्यपालक निदेशक, एनडीडीबी और डॉ बी एल सारस्वत, कार्यपालक निदेशक, राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (एनबीबी) ने इस समारोह की शोभा बढ़ाई।

राजस्थान में डेरी उद्योग

भारत में पशुधन तथा डेरी क्षेत्र ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उत्पादन मूल्य के संदर्भ में भारत में दूध अकेली सबसे बड़ी कृषि पण्यवस्तु है। एनडीडीबी ने डेरी उद्योग को भारत के ग्रामीण लोगों के विकास का माध्यम बनाने और लाखों छोटे दूध उत्पादकों को डेरी उद्योग के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए विभिन्न पहल आरंभ की हैं। आज देश में डेरी सहकारी आंदोलन के माध्यम से लगभग 1.7 लाख सहकारी समितियों / उत्पादक संगठनों से संबद्ध 1.70 करोड़ से अधिक दूध उत्पादकों को लाभ प्राप्त हो रहा है। कुल मिलाकर ये किसान अपने दूध उत्पाद के लिए लगभग ₹4700 करोड़ की राशि मूल्य के रूप में प्राप्त करते हैं। ▶